

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु
॥ श्रीमन्नारायणीये अष्टारिंशं दशकम् ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

॥ শ্রীমন্নারাযণীযে অষ্টারিংশং দশকম্ ॥

অমৃতমথনে কালকুটাদ্যুৎপত্তির্ণনং, লক্ষ্মীস্বয়ংররর্ণনং,

অমৃতোৎপত্তির্ণনম্ চ

গরলং তরলানলং পুরস্তা -

জ্জলধেরুদ্বিজগাল কালকুটম্।

অমরস্তুতিরাদমোদনিঘ্নো

গিরিশস্তন্বিপপৌ ভরৎপ্রিযার্থম্ ॥ 28.1 ॥

রিমথৎসু সুরাসুরেষু জাতা

সুরভিস্তামৃষিষু ন্যাধাস্ত্রিধামন্।

হযরত্নমভূদথেভরত্নং

দ্যুতরুশ্চান্সরসঃ সুরেষু তানি ॥ 28.2 ॥

জগদীশ ভরৎপরা তদানীং

কমনীযা কমলা বভূর দেরী।

অমলামরলোক্য যাং রিলোলঃ

সকলোহপি স্পৃহযাম্বভূর লোকঃ ॥ 28.3 ॥

ৎরযি দত্তহদে তদৈর দের্যৈ

ত্রিদশেন্দ্রো মণিপীঠিকাং র্যতরীৎ।

সকলোপহতাভিষেচনীযৈঃ

ঋষযস্তাং শ্রুতিগীর্ভিরভ্যষিঞ্চন্ ॥ 28.4 ॥

অভিষেকজলানুপাতিমুঞ্চ -

ৎরদপাঙ্গৈরভূষিতাঙ্গরল্লীম্।

मणिकुण्डलपीतचेलहार -
प्रमुथैस्तममरादयोह्रदुषन् ॥ 28.5 ॥

ररणस्रजमातुडृग्नादां
दधती सा कुचकुम्भमन्दयाना।
पदशिञ्जितमञ्जुनूपुरा एरां
कलितब्रीलरिलासमाससाद ॥ 28.6 ॥

गिरिश द्रुहिणादिसर्ददेरान्
गुणभाजोहपरिमुक्तदोषलेशान्।
अरमृश्य सदैर सर्दरमेय
निहिता एरयनयाहपि दिर्यमाला ॥ 28.7 ॥

उरसा तरसा ममानिथैनां
डुरनानां जननीमनन्यभाराम्।
एरदुरोरिलसतुदीक्ष्णश्री -
परिबृष्ट्या परिपुष्टमास रिश्रम् ॥ 28.8 ॥

अतिमोहनरिद्रमा तदानीं
मदयन्ती खलु वारुणी निरागां।
तमसः पदरीमदास्रुमेना -
मतिसम्माननया महासुरेभ्यः ॥ 28.9 ॥

तरुणाम्बुदसुन्दरस्तदा एरं
ननु ध्रुवस्तुरिरुथितोहम्बुराशेः।
अमृतं कलशे ररहन् कराभ्या -
मथिलार्तिं हर मारुतालयेश ॥ 28.10 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये अष्टारिंशं दशकं समाप्तम् ॥